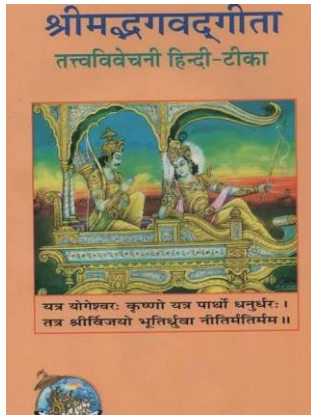


महापुरुषो गीता जी के बारे में विचार-:



गीता प्रेस के संस्थापक, संरक्षक, प्रातः स्मरणीय श्रद्धेय सेठ जी श्री जयदयाल जी गोयंदका के गीता जी के बारे में विचार- :

- 1- गलीगीता हो जाए- गली में गीता-, ऐसा कोई भी घर बाकी नहीं रहने दे, जिस घर में गीता ना हो। जिस घर में गीता नहीं, वह घर शमशान के समान है।
- 2- एक गीता के द्वारा हजारों ,लाखों ,करोड़ों का कल्याण हो सकता है। इसकी बड़ी विलक्षणता है। गीता के प्रचार के लिए तो हमें सेना की तरह तैयार हो जाना चाहिए।
- 3- गीता का प्रचार हुआ तो हम तब माने ,जब जन्मता ही बच्चा गीता - गीता बोले।
- 4- मेरी दृष्टि में गीता जी से बढ़कर कोई शास्त्र नहीं। गीता को भगवान से भी बढ़कर बतावे तो भगवान नाराज़ नहीं होंगे ।

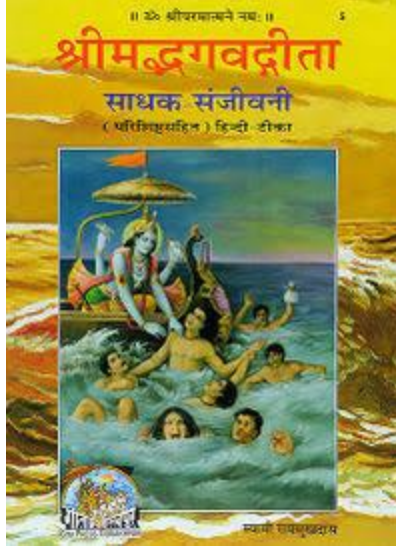
5- गीता में स्नान करने वाला संसार का उद्धार कर सकता है।

6- गीता प्रचार करने वाले लोगों से बढ़कर मेरा प्यारा कोई नहीं है।

7- सारे शास्त्र दब जाएंगे तो गीता जीतीजागती रह जाएगी।-

8- गीता का प्रचार करना भगवान का ही काम है। निमित्त कोई भी बन जाए ,सारा काम स्वयं ही करते हैं। तैयार होकर करो, डरो मत, विश्वास रखो।

9- जैसे हनुमान जी महाराज ने राम नाम को रोम रोम में रमा लिया था वैसे ही हम भी गीता जी को रोम रोम में रमा लेवें।



श्रीमद्भगवद्गीता के मर्मज्ञ, विलक्षण ग्रंथ साधक संजीवनी के रचियता, प्रातः स्मरणीय श्रद्धेय स्वामीजी श्री रामसुखदास जी महाराज जी के गीता जी के बारे में विचार:-

1- जो गीता अर्जुन को भी दोबारा सुनने को नहीं मिली वह हमें प्रतिदिन पढ़ने व सुनने को मिल रही है -यह भगवान की कितनी विलक्षण कृपा है।

2- समुंद्र में से कोई राई नहीं निकाल सकता। परंतु संतों ने संसार भर के ग्रंथों में से "गीता" निकालकर हमें दे दी -यह उनकी कितनी विलक्षण कृपा है।



मैंने बहुत पहले ही अपनी सांसारिक मां को खो दिया। लेकिन मेरी शाश्वत मां ने पूरी तरह सर्वदा के लिए उस स्थान को भरे रखा। उन्होंने "गीता" मुझे कभी भी हराने नहीं दिया। जब भी मैं हताश और निराश होता हूं तो की गोद में शरण लेता हूं। "गीता मां"

मैं चाहता हूं गीता केवल राष्ट्रीय शालाओं में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक शिक्षण संस्थाओं में पढ़ाई जाए। एक हिंदू बालक या बालिका के लिए गीता को ना जानना शर्म की बात होनी चाहिए।

-महात्मा गांधी



ज्ञान भक्ति युक्त ही गीता का सार है। सनातन वैदिक धर्म वृक्ष का -
अत्यंत मधुर तथा अमृत फल है।

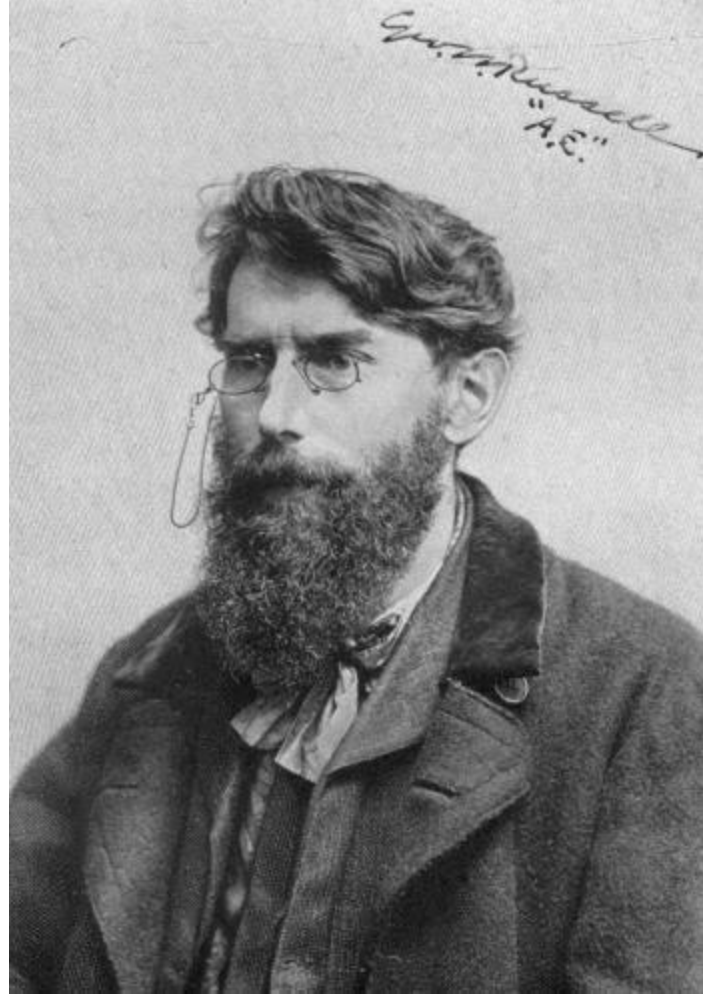
- लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

महर्षि अरविंद घोष



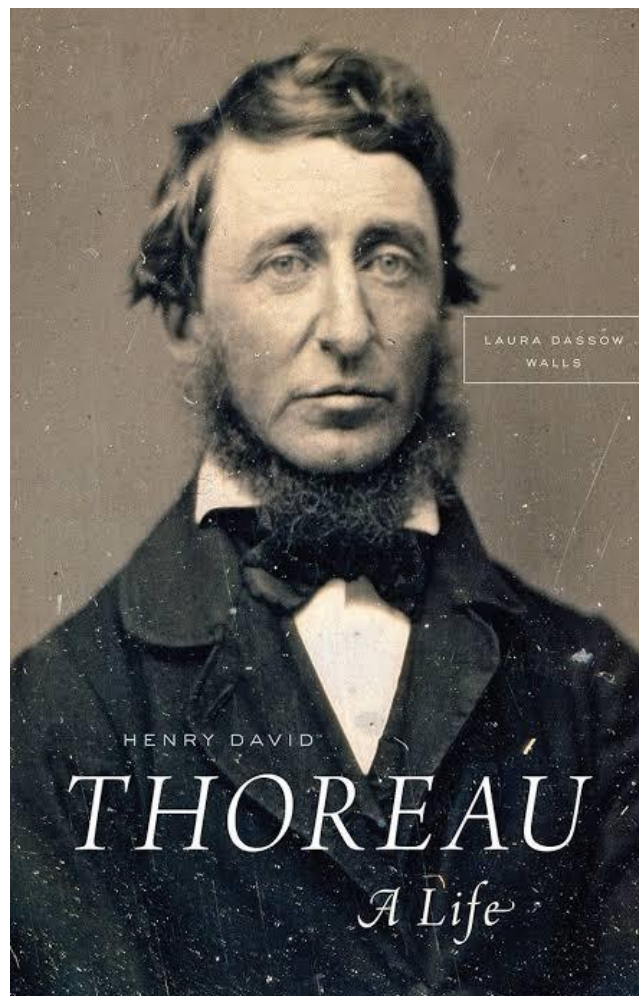
गीता नीतिशास्त्र या आचार शास्त्र का ग्रंथ नहीं है। अपितु आध्यात्मिक जीवन का ग्रंथ है।

-अरविंद घोष



भगवद्गीता में ऐसा पूर्ण ज्ञान मिलता है, जिसे पढ़कर हमारी आत्मा को इतनी शांति और निश्चिंतता अनुभव होती है।

-जॉर्ज विलियम रसेल



मैं प्रतिदिन भगवद्गीता के जल में स्नान करता हूं। गीता के साथ तुलना करने पर जगत का आधुनिक समस्त ज्ञान मुझे तुच्छ लगता है।

- थोरो

भगवद्गीता पर बाहर वालों का (अहिंदुओं) उतना ही अधिकार है,
जितना किसी भारतीय अथवा हिंदू कहलाने वाले का है।

-डॉक्टर मुहम्मद हाफिज –सैयद

